International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 4, July-August, 2025

कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं में सामाजिक–समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. एकता पारीक, अमिता कुमारी

[1]प्राचार्या, बियानी गर्ल्स बी. एड. कॉलेज
[2]बी.एड. एम. एड. छात्रा बियानी गर्ल्स बी. एड. कॉलेज

सारांश

बदलते हुए परिवेश में महिलाएँ पुरूषों की तुलना में किसी भी प्रकार से किसी की क्षेत्र में कम नहीं है। भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त पुरुषों के समान श्रेणी तथा समान अधिकारों से महिलाओं में स्वयं के प्रति, अपने अधिकारों के प्रति तथा अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूकता आयी है। आज की जटिल सामाजिक परिस्थितियों में मानव आर्थिक रूप से सुदृढ़ता के प्रति प्रयत्नशील देखा जाता है जिससे वह अपने सुखमय जीवन के लिए वांछित सुख–सुविधाओं को जुटा सके और इन साधनों को जुटाने में मूल्य वृद्धि जैसी समस्याएँ बाधक बन खड़ी हो रही है। इन परिस्थितियों में भी महिलाओं ने अपने आपको केवल गृहणी के दायित्व तक सीमित न रखकर बाहर की अपनी शिक्षा, कार्य कुशलता तथा क्षमताओं के उपयोग के प्रति जागरूकता आयी है। इसलिए शोधकर्त्री ने "कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं में सामाजिक–समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन का अध्ययन किया जिसमें शोधकर्त्री ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। साथ ही न्यादर्श के रूप में 200 महिलाओं का चयन किया है एवं आंकडों का विश्लेषण करके प्रतिशत सांख्यिकी विधि का प्रयोग करते हुए बार ग्राफ के माध्यम से आंकडो ंका प्रदर्शन किया है।

शब्दावली :–कामकाजी, गैर कामकाजी, सामाजिक, समायोजन

प्रस्तावना

जिस प्रकार अधिगम की प्रक्रिया जीवन्त चलती है। उसी प्रकार समायोजन की प्रक्रिया भी जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती है। समायोजन, तालमेल तथा अनुकूलन को एक अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। जन्म लेते ही बालक को अपने भौतिक वातावरण के साथ अनुकूलन करना पड़ता है। जीवन के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक भी है। कुछ समय के उपरान्त बालक को अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण के साथ जीवन– पर्यन्त समायोजन करना पड़ता है। आज जबकि विश्व को "विश्व गाँव" की संज्ञा दी गई है, सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण के साथ बालक हो या प्रौढ़ समायोजन करना आसान नहीं है। विश्व में तीव्र परिवर्तनों की लहर के साथ सन्तुष्ट बनाने का प्रयास प्रत्येक व्यक्ति कर रहा है। भौतिक, सामाजिक वातावरण से अलग एक और वातावरण है जो प्रत्येक व्यक्ति के अर्न्तमन से सम्बन्धित है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी इच्छाएँ, रूचियाँ व संज्ञानात्मक योग्यताएँ की उसे विभिन्न प्रकार से भिन्न–भिन्न स्तरों पर समायोजन को प्रभावित करती है। व्यक्ति को जीवन की चुनौतियों का अपनी योग्यताओं और वातावरण के सन्दर्भ में सामना करना होता है। कभी समझौता करना होता है तो कभी उसके साथ समन्वय बैठाना होता है। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया व उपलब्धि को समायोजन कहा जाता है।

प्रत्येक विचारित अनुसंधानित क्रिया सदैव सार्थक होती है। इस दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन कामकाजी महिलाओं, गैर–कामकाजी महिलाओं में सामाजिक समायोजन के लिए उपयोगी व महत्वपूर्ण है। किसी भी शोध अध्ययन का मूल्यांकन उसकी नवीनता, उपयोगिता, प्रासंगिकता तथा उसके निष्कर्षों की विस्तृत क्षेत्र में व्यवहार तथा योग्यता पर आधारित होता है। हमारे देश में कामकाजी महिलाओं की बढ़ती संख्या को देखते हुए उनके व्यवसाय की तुलना उपेक्षित न रह जाये, ऐसी सम्भावना का पता कामकाजी महिलाओं में घटती शैक्षिक स्थिति

व घटते समायोजन का अध्ययन करके पता लगाया जा सकता है। अतः निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर शोध के औचित्य को प्रतिपादित किया जा सकता है।

इस कारण महिलाओं का सर्वांगीण विकास भी नहीं हो पाता है। वे मानसिक रूप से ग्रसित होने लगती है। जिसका प्रभाव उसके व्यवहार में दृष्टिगोचर होता है। वे गलत संगति की ओर जल्द ही आकर्षित होने लगती है तथा अनेक बुरी आदतों में लिप्त हो जाती हैं। इन सभी कारणों से महिलाओं के मध्य दूरी बढ़ जाती है। कामकाजी महिलाओं के मस्तिष्क में हर समय अपने शैक्षिक स्थिति को लेकर अनेकों चिन्ताएँ चलती रहती है। महिलाओं को समायोजित होकर प्रत्येक कार्य के लिए पर्याप्त समय निकालना पड़ता है तथा माता–पिता के कामकाजी होने से अपने दैनिक जीवन के कार्य स्वयं करने लगती है, जिससे वे किसी पर निर्भर नहीं रहती। यदि कामकाजी महिलाओं के मध्य समायोजन सही हो तो कोई परेशानी उत्पन्न नहीं होती तथा उनका जीवन भी सफल बन जाता है।

अध्ययन का औचित्य –
कामकाजी महिलाओं के पास समयाभाव के कारण परिवार की देखभाल की समस्या जटिल होती है क्योंकि जो धन कमाया जा रहा है उसका उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पा रहा है अर्थात् उस धन का सदुपयोग चहुँमुखी विकास के लिये तो किया जा रहा है लेकिन आत्मीय सहयोग की कमी खलती है। इसी दृष्टिकोण को आधार बनाकर शोध समस्या का महत्व प्रतिपादित किया गया है –

1. कामकाजी महिलाओं की व्यस्तता को कम करके बच्चों के लिये समय निकालना।
2. कामकाजी महिलाओं को परिवार के साथ समायोजित होना।
3. कामकाजी महिलाओं के द्वारा कुछ दिनों की छुट्टियाँ लेकर भ्रमण के लिए जाना चाहिए।
4. कामकाजी महिलाओं को स्वालम्बन का अध्याय सीखाना ताकि स्वयं समायोजित हो जावें।

समस्या कथन
"कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं में सामाजिक–समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।"

शोध समस्या का उद्देश्य

1. कामकाजी महिलाओं में सामाजिक समायोजन का अध्ययन करना।
2. गैर कामकाजी महिलाओं में सामाजिक समायोजन का अध्ययन करना।
3. कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं में सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

1. कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं में संवेगात्मक समायोजन क्षेत्र में सार्थक अन्तर होता है।
2. कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं में सामाजिक समायोजन क्षेत्र में सार्थक अन्तर होता है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त विधि
प्रस्तुत शोध मे दत्तों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श
सीकर जिले की 200 महिलाओं का चयन किया गया जिसमें से कामकाजी महिलाएँ 100 व गैर कामकाजी महिलाएँ 100 सम्मिलत हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण
कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के सामाजिक समायोजन का अध्ययन करने के लिए शोधकर्त्री ने सिन्हा व सिंह की मापनी का प्रयोग किया जिसमें निम्न क्षेत्रों का चयन किया गया है –

1. सांवेगिक
2. सामाजिक
3. शैक्षिक

कामकाजी महिलाओं के समायोजन के क्षेत्रों पर मध्यमान विचलन

क्र.सं.	क्षेत्र	मध्यमान	समायोजन
1ण	संवेगात्मक	16ण74	
2ण	सामाजिक	18ण20	
3ण	शैक्षिक	17ण96	समायोजित 0 . 20
	कुल	52ण90	कुसमायोजित 21 . 50

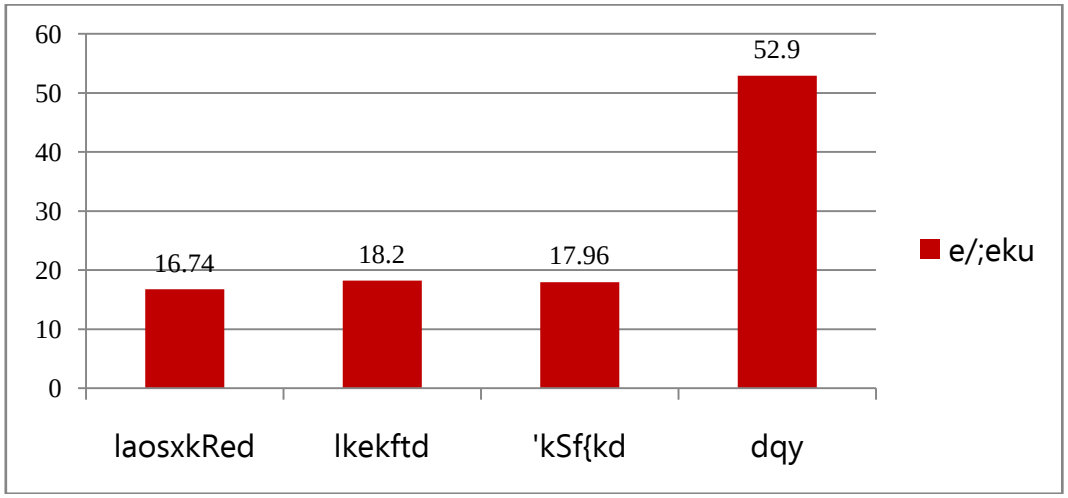

परिणाम

प्रथम क्षेत्र – संवेगात्मक समायोजन कामकाजी 100 महिलाओं के समायोजन के प्रथम क्षेत्र संवेगात्मक पर 20 कथनों पर सहमति ली गई। इस क्षेत्र में मध्यमान 16.74 प्राप्त हुआ जो समायोजित के मान 20 से कम है। अतः कहा जा सकता है कि कामकाजी महिलाओं के संवेगात्मक रूप से समायोजित होती है।

द्वितीय क्षेत्र – सामाजिक समायोजन कामकाजी 100 महिलाओं के समायोजन के द्वितीय क्षेत्र सामाजिक समायोजन पर 20 कथनों पर सहमति ली गई। इस क्षेत्र में मध्यमान 18.20 प्राप्त हुआ जो समायोजित के मान 20 से कम है। अतः कहा जा सकता है कि कामकाजी महिलाओं के सामाजिक समायोजन के क्षेत्र में समायोजित होती है।

तृतीय क्षेत्र – शैक्षिक समायोजन कामकाजी 100 महिलाओं के समायोजन के तृतीय क्षेत्र शैक्षिक समायोजन पर 20 कथनों पर सहमति ली गई। इस क्षेत्र में मध्यमान 17.96 प्राप्त हुआ जो समायोजित के मान 20 से कम है। अतः कहा जा सकता है कि कामकाजी महिलाओं के शैक्षिक समायोजन में समायोजित होती है।

गैर कामकाजी महिलाओं के समायोजन के क्षेत्रों पर मध्यमान विश्लेषण

क्र.सं.	क्षेत्र	मध्यमान	समायोजन
1ण	संवेगात्मक	13ण93	0 दृ 20
2ण	सामाजिक	14ण20	समायोजित
3ण	शैक्षिक	13ण98	21 . 50
	कुल	41ण72	कुसमायोजित

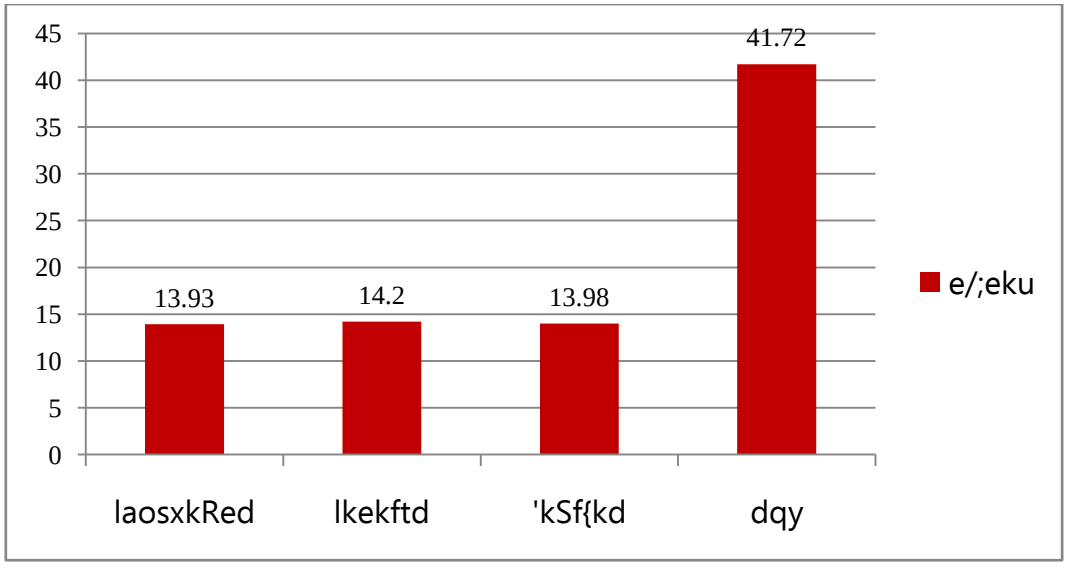

परिणाम

प्रथम क्षेत्र–संवेगात्मक समायोजन गैर कामकाजी 100 महिलाओं के समायोजन के प्रथम क्षेत्र संवेगात्मक पर 20 कथनों पर सहमति ली गई। इस क्षेत्र में मध्यमान 13.93 प्राप्त हुआ जो समायोजित के मान 20 से कम है। अतः कहा जा सकता है कि गैर कामकाजी महिलाओं के संवेगात्मक रूप से समायोजित होती है।

द्वितीय क्षेत्र–सामाजिक समायोजन गैर कामकाजी 100 महिलाओं के समायोजन के द्वितीय क्षेत्र सामाजिक समायोजन पर 20 कथनों पर सहमति ली गई। इस क्षेत्र में मध्यमान 14.20 प्राप्त हुआ जो समायोजित के मान 20 से कम है। अतः कहा जा सकता है कि गैर कामकाजी महिलाओं के सामाजिक रूप से समायोजित होती है।

तृतीय क्षेत्र–शैक्षिक समायोजनगैर कामकाजी 100 महिलाओं के समायोजन के तृतीय क्षेत्र शैक्षिक समायोजन पर 20 कथनों पर सहमति ली गई। इस क्षेत्र में मध्यमान 13.98 प्राप्त हुआ जो समायोजित के मान 20 से कम है। अतः कहा जा सकता है कि गैर कामकाजी महिलाओं के शैक्षिक रूप से समायोजित होती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने अपने एक लघु प्रयास द्वारा यह अनुभव किया कि वर्तमान समय में महिलाओं का सर्वांगीण विकास के लिए उसके व्यक्तित्व सम्बन्धी गुणों को विकसित होना अति आवश्यक है। इस शोध अध्ययन के माध्यम से शोधकर्त्री ने यह बताने का प्रयास किया है कि एक ओर जहाँ आज की भाग–दौड़ भरी जिन्दगी में महिलाएँ व्यस्त होती जा रही है जिससे वो अपने परिवार को पर्याप्त समय नहीं दे पाती है। इसी कारण उनके परिवार का समायोजन न कर पाने जैसी समस्याओं से ग्रसित होते जा रहे है। दूसरी तरफ वे महिलाएँ जो पूर्णतः अपने परिवार के प्रति समर्पित होकर अपने परिवार का भरण–पोषण करती है उनके परिवार इस प्रकार की समस्याओं से मुक्त रहते है। अतः संक्षेप में शोधकर्त्ता यह बताना चाहता है कि कामकाजी महिलाएँ भी अपने परिवार को पर्याप्त समय दे तो उनका समायोजन का स्तर भी सन्तुलित रहेगा वे समायोजन न कर पाने जैसी समस्याओं से मुक्त हो सकते है। शोधकर्त्री यहीं पर अपने शोध अध्ययन को विराम देती है और भविष्य में यदि पुनः अवसर मिलता है तो इस अध्ययन को विस्तृत करके अपने विशिष्ट व उपयोगी सुझावों से शिक्षा जगत् को योगदान प्रदान करेगी।

सुझाव

विद्यार्थियों के लिए सुझाव–

1. विद्यार्थियों को अपनी निजीकरण के विकास के हेतु पत्र–पत्रिकाओं व दूरदर्शन का भी उचित उपयोग करना चाहिए।

2. विद्यार्थियों को अपने संवेगों पर नियंत्रण रखकर प्रत्येक कार्य को धैर्यपूर्वक करने की आदत का विकास करना चाहिए।

अध्यापकों के लिए सुझाव–

1. अध्यापकों को अपने अध्यापन कार्य में विभिन्न सहायक सामग्री का प्रयोग करते हुए रोचक ढ़ंग से प्रस्तुत करना चाहिए।
2. विद्यार्थियों की समस्याओं का समुचित ढ़ंग से यथासम्भव समाधान करना चाहिए।

समाज के लिए सुझाव–

1. यदि बालक कुछ नवीन सृजन करने की कोशिश कर रहा हो तो समाज द्वारा उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, बल्कि उसको उचित प्रोत्साहित करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. **आहूजा, आर. (2012)** : सामाजिक अनुसंधान नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन्स. पृ. सं. 28–161.
[2]. **भटनागर, ए. बी. एवं भटनागर, एम. (2007)** : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ 124–143
[3]. **गुप्ता, डी. डी. (2003)** : भारत में समाज. आगरा : साहित्य प्रकाशन. चच 60–61
[4]. **लाल, आर. बी. (2007)** : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा. मेरठ : आर. लाल बुक डिपो. चच 225–228
[5]. **मंगल, ए. एवं अन्य (2008)** : शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ एवं शैक्षिक सांख्यिकी. आगरा : राधा प्रकाशन मंदिर. पृ. सं. 79–269.
[6]. **मंगल, ए. (2008)** : शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ एवं सांख्यिकी. जयपुर : शिक्षा प्रकाशन. चच 33–35
[7]. **मौर्य, एस. (2012)** : व्यक्तित्व विकास में महर्षि पतंजलि के योगदान का शैक्षिक महत्व. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका. चच 30–32
[8]. **पाठक, पी.डी. (2005)** : शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 22–29
[9]. **पंवार, एल. के. (1988)** : राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान. बीकानेर : शिक्षा विभाग राजस्थान. चच 47–50